6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए :- (7)

(क) प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी

(ख) भारतेन्दु युग और नाटक

Library 05|01|24 (Evening)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Maitreyi College LIBRARY Chanakya Puri, New Delhi-110021

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 3099 **G**

Unique Paper Code : 52051307

Name of the Paper : Hindi 'A'

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester : III

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

munotes.in

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निबंध के उद्भव तथा विकास पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

संस्मरण के विकास क्रम का सामान्य परिचय दीजिए।

2. 'धूप का एक टुकड़ा' कहानी का सार लिखिए। (12)

P.T.O.

अथवा

कहानी कला की दृष्टि से 'हिली-बोन की बत्तखें' कहानी की समीक्षा कीजिए।

3. 'करुणा' निबंध का सार लिखिए। (12)

अथवा

निबंध के तत्वों के आधार पर 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध की समीक्षा कीजिए।

4. 'चीनी-भाई' के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

'वैष्णव की फिसलन' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (10×2=20)

(क) सारांश यह है की करुणा की प्राप्ति के लिए पात्र में दुःख के अतिरिक्त और किसी विशेषता की अपेक्षा नहीं। पर आनंदित हम ऐसे ही आदमी के सुख को देख कर होते हैं जो या तो हमारा सुहृद या सम्बन्धी हो अथवा अत्यंत सज्जन, शीलवान या

चरित्रवान होने के कारण समाज का मित्र या हितकारी हो। यों ही किसी अज्ञात व्यक्ति का लाभ या कल्याण सुनने से हमारे हृदय में किसी प्रकार के आनंद का उदय नहीं होता। इससे प्रकट है की दूसरों के दुःख से दुखी होने का नियम बहुत व्यापक है।

(ख) धर्म की इस बुद्धिहीन दृढ़ता और देव दुर्लभ त्याग पर मन बहुत झुंझलाया। अब दोनों शक्तियों में संग्राम होने लगा, धर्म ने उछल-उछल कर आक्रमण करने शुरू किए। एक से पांच, पांच से दस, दस से पंद्रह, और पंद्रह से बीस हजार तक नौबत पहुंची, किन्तु धर्म अलौकिक वीरता के साथ बहुसंख्यक सेना के सम्मुख अकेला पर्वत की भांति अटल, अविचलित खड़ा था। अलोपीदीन निराश होकर बोले, "अब इससे अधिक मेरा साहस नहीं। आगे आपको अधिकार है।"

(ग) अपनी कथा सुनाने के लिए भी वह विशेष उत्सुक रहा करता था; पर कहने -सुनने वाले के बीच की खाई बहुत गहरी थी उसे चीनी और बर्मी भाषाएँ आती थी, जिनके सम्बन्ध में अपनी सारी विद्या-बुद्धि के साथ मैं 'आंखों के अंधे नाम नैनसुख' की कहावत चरितार्थ करती थी अंग्रेजी की क्रियाहीन संज्ञाएँ और हिंदुस्तानी की संज्ञाहीन क्रियाओं के सम्मिश्रण से जो विचित्र भाषा बनती थी उसमें कथा का सारा मर्म बंध नहीं पाता था पर जो कथाएं हृदय का बाँध तोड़कर दूसरों को अपना परिचय देने के लिए निकलती हैं, वे प्रायः करुण होती हैं।

munotes.in